गांधी-मार्ग

जनवरी-फरवरी 2025

नववर्षांक

न कभी गांधी पुराने होते हैं,
न कभी गांधी-मार्ग पुराना होता है!

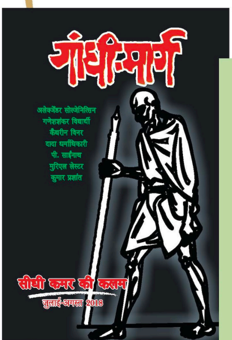

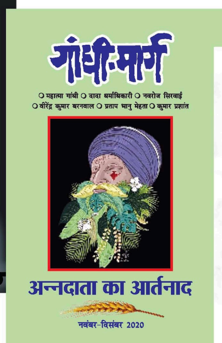

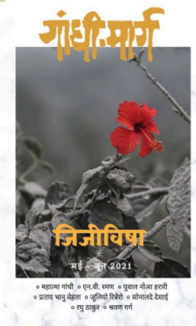

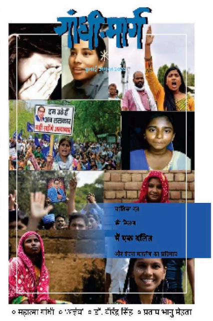

पुराने पड़ जाने से बचिए-
गांधी-मार्ग नियमित पढ़िए!

आज ही गांधी-मार्ग के नियमित पाठक बनिए

'गांधी-मार्ग' की शुल्क तालिका

वार्षिक शुल्क भारत में एक वर्ष के लिए **200** रुपये

दो वर्ष के लिए **350** रुपये

आजीवन **1000** रुपये (व्यक्तिगत),

आजीवन **2000** रुपये (संस्थागत)।

गांधी शांति प्रतिष्ठान के नाम चेक भेजें अथवा ऑनलाइन भुगतान करें।

ऑनलाईन भुगतान का विवरण
गांधी पीस फाउंडेशन
बैंक का नाम : केनरा बैंक, डी.डी.यू. मार्ग, नई दिल्ली-2
खाता न. : **0158101030392**
आई.एफ.एस.सी. कोडः **CNRB0000158**

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक

वर्ष 67, अंक 1, जनवरी-फरवरी 2025

गांधी शांति प्रतिष्ठान

1. **नया साल नया नजरिया :**	5-10
2. आजादी चौतरफा होगी तभी असली होगी महात्मा गांधी	13
3. **व्याख्यान :** गांधी के समुद्र में उठती लहरें दिलीप सिमियन	39
4. **टिप्पणियां**	57
5. **पत्र**	62

आवरण : क्या हो कि नया साल नया हो— दिखे भी और महसूस भी हो? जवाब है : जब वह कागज से धरती पर उतरे! गांधी जब आजाद भारत के गांवों के निर्माण की बात करते थे, ग्रामस्वराज्य का नक्शा खींचते थे तब जर्मन कलाकार एंड्री वूल्फ का जन्म भी नहीं हुआ था. लेकिन एक खुशहाल सामूहिक जीवन को आंकने वाली उनकी यह पेंटिंग गांधी की कल्पना के करीब पहुंचती है जहां विज्ञान हमला नहीं करता है बल्कि प्रकृति के साथ घुलमिल कर जीता है.

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), एक प्रति का मूल्य 20 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क. दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें. अपना शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' के नाम भेजें. ऑनलाइन भुगतान के लिए केनरा बैंक खाता नं. 0158101030392 IFSC CODE : CNRB 0000158.

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रबंध :** मनोज कुमार झा **प्रसार :** भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित

फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, **Email:** gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नियर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

शुरू में ...

यह उलझन मुझे हर साल होती है जब जनवरी के साथ नया साल शुरू होता है! नया साल उत्साह का, नये प्रारंभ और नयी आशा का अवसर होता है. उत्साह व आशा के बहुत कारण न भी हों तो भी कैलेंडर बदलता है तो कुछ नया तो हो ही जाता है. 365 दिनों की एक दौड़ खत्म कर हम 365 दिनों की नयी दौड़ के लिए तैयार होते हैं. लेकिन हर नये साल की जनवरी 29 कदम चलते-चलते जब 30 जनवरी तक पहुंचती है तब एक अंधेरा मन के आसमान को छा लेता है : यह गांधी की हत्या का दिन है, शुभ की तरफ जाती मानवता के ठिठकने का दिन है. ईसा की सूली सारी मानवता को पामाल बना जाती है, गांधी की हत्या सारी मानवता को बौना बना जाती है.

वे 3 गोलियां गांधी के सीने को छलनी कर रुकीं नहीं; वे लगातार इतिहास के सीने को छलनी करती जा रही हैं. कई बार सोचता हूं कि हम 30 जनवरी 1948 की शाम के 5.17 मिनट से आगे चले ही नहीं क्या?

अगर हम उन 3 गोलियों को वहीं छोड़ कर, दफना कर आगे चल पड़े होते तो क्यों लगातार दागी जा रही हैं दुनिया में इतनी गोलियां? लाशें अब गिनी भी नहीं जातीं, क्योंकि वे अनगिनत हैं; अब कोई शांति की कोशिश नहीं करता है, क्योंकि अशांति ही रणनीति बन गई है; अब किसी को कोई पीड़ा नहीं होती है, क्योंकि सत्ता की कुर्सी के पांव के नीचे संवेदना की जमीन नहीं होती है.

मुझे आतंकी हिंसा से, वाम हिंसा से, गैंगवार से, जातीय हिंसा से, सांप्रदायिक हिंसा आदि से ज्यादा चिंता नहीं होती है. आत्महत्या से भी नहीं, क्योंकि वह निराश-बीमार-कमजोर मन का परिणाम होती है. उसका अफसोस भी होता है, मरे के प्रति सहानुभूति भी. मीराबाई तो कब से गाए जा रही हैं, जो उसने सुना ही नहीं : **नाहिं ऐसो जनम बारंबार/बढ़त छिन-छिन, घटत पल-पल, जात न लागे बार/बिरछ के ज्यों पात टूटै, बहुरौ न लागे डार...** यह आदमी की समझ के उन्मेष का सवाल है जिस पर भी बहुत काम करने की जरूरत है. ये सब व्यवस्थाजन्य बीमारियां हैं जिनका इलाज नीतियां-व्यवस्थाएं-मान्यताएं तथा धारणाएं बदलने से हो जाएगा. मान लें कि नहीं होगा तो हम सिर जोड़ कर कुछ नया व कुछ परिणामकारी दूसरा खोज लेंगे. लेकिन अपना राज्य ही मौत का ऐसा भयानक आयोजन करे कि भयानकता भी मुंह छुपाने लगे, तो क्या करें? यूक्रेन व रूस जिस नरसंहार में जुटे हैं, और आका राज्य जिन्हें संहार का हथियार

मुहैया करा रहे हैं, उसका क्या? हत्या का जैसा षड्यंत्र हमास ने रचा और फिर जो तांडव इसराइल ने गजा में मचाया, उसका क्या? बांग्लादेश में जैसा विनाश रचा गया उसका क्या? पाकिस्तान, म्यांमार, श्रीलंका में मौत की जो आंधी उठाई गई, उसका क्या? और हमारे अपने यहां घृणा उकसा कर, उन्माद जगा कर जो हत्याएं हो रही हैं, उनका क्या? कोई भले न बोले लेकिन कुंभ मेले में, और ऐसे सारे सामाजिक-धार्मिक आयोजनों में, राज्यरचित उन्माद व लोभ के कारण जो भीड़ जुटाई जा रही है, उनमें जो हादसे लगातार हो रहे हैं, उनका क्या? वे हादसे नहीं, हत्या है. आम नागरिक, जिसे गांधी हर प्रयास व चिंतन का आधार मानते थे, वह आज एकदम निहत्था व अरक्षित रह गया है.

राज्य हमारी रची व्यवस्था है; और वही राज्य सारी दुनिया में हत्या का सबसे बड़ा आयोजक, समर्थक व दर्शक बन गया है. सारी दुनिया देखती रही और गजा को मलबे के ढेर में बदल दिया गया! जिस राज्य को इसलिए बनाया था हमने कि वह हर ज्यादती को नियंत्रित करेगा और स्वयं संविधान के नियंत्रण में रहेगा, वह किसी दैत्य-सा, नागरिकों को कुचलता सत्तांध बन गया है. विनोबा ने कहा था : राज्य मनुष्य द्वारा रची सबसे खतरनाक संस्था है! लेकिन इतनी खतरनाक!! यह सारी दुनिया में मानवीय स्वतंत्रता व गरिमा की सबसे क्रूर व अमानवीय भक्षक है.

इससे त्राण पाने की हर कोशिश गांधी का तर्पण है. जब तक हम ऐसा कुछ नहीं कर पाते, हम कैलेंडर भले बदलते रहें, कोई साल नया होगा नहीं, और गांधी अपनी कब्र से बोलते रहेंगे, पूछते रहेंगे.

-कु.प्र.

30 जनवरी

आज हम यतीम हुए थे :
हमारे वालिद का जिस्मानी
कत्ल हुआ था

आज हम बालिग हुए थे :
हमारे वालिद का रुहानी
मेराज हुआ था

आज हम साथी बने थे :
हमारे वालिद की विरासत
का आगाज हुआ था

○ **हिलाल अहमद 'आतिफ'**

सुख : मेरा नुस्खा

एक अखबार ने मुझसे पूछा था– "सुख के लिए आपका नुस्खा क्या है?" मैं चकित-सा सोचता रहा– "सुख के लिए मेरा नुस्खा क्या है?"

फिर अपने आप ही उत्तर मिल गया– मैं उस समय अपने को सुखी और प्रसन्न अनुभव करता हूं, जब मैं अपने लिए नहीं, बल्कि अपने प्रियजनों के लिए, अपने काम के लिए जी रहा होता हूं. हां, सुख के लिए मेरा यह नुस्खा है– अपने बाहर जियो; अपने बारे में जितना कम हो सके, उतना कम सोचो!

हम सभी ऐसे नर-नारियों को जानते हैं, जो सब अपने ही बारे में सोचते रहते हैं. उन्हें हरदम अपने स्वास्थ्य की चिंता लगी रहती है– ओह, दिल बहुत तेज धड़क रहा है; हाजमा बहुत धीमे काम कर रहा है; दिन के अंत में बहुत थकावट अनुभव होती है! कैसे खतरनाक लक्षण! अपना रोग-निदान भी वे लोग स्वयं करते हैं; और यह बड़ी ही डरावनी बात है. अगर उनके पास अपनी